लोक गाथाएँ

(1)

हिन्दी क्षेत्र में लोक गाथा शब्द अंग्रेजी शब्द 'बैलेड' के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है। प्रारंभ में इस शब्द के अर्थ को जानने के लिए ग्राम-गीत, नृत्य-गीत, आख्यान-गीत, वीरगाथा, वीर-गीत, वीर काव्य आदि अनेक शब्दों का प्रयोग किया जाता था परन्तु अब लोक गाथा के लिए बैलेड शब्द सर्वमान्य हो गया है। विद्वानों के अनुसार (1) बैलेड एक ऐसा गीत है जिसमें कोई कथा कही गई हो अथवा बैलेड वह कथा है जो गीतों में कही गयी है। (2) लोक गाथा सरल वर्णनात्मक गीत है जो लोक मात्र की सम्पत्ति होती है और जिसका प्रसार मौखिक रूप से होता है।

3.) लोक गाथा गाने के लिए रची गई एक ऐसी कविता है जो सामग्री की दृष्टि से व्यक्तिशून्य हो और उद्भव की दृष्टि से सामुदायिक नृत्यों से सम्बन्धित हो किन्तु जिसमें मौखिक परंपरा प्रधान हो गई हो। इसको गाने वाले साहित्यिक प्रभावों

Scanned with CamScanner

से मुक्त होते हैं।

4) लोक गाथा छोटे पदों में रचित एक ऐसी सरल कविता है, जिसमें कोई लोकप्रिय कथा बहुत ही विशद रीति से कही गई हो।

महाराष्ट्र में लोक गाथा के लिए "पवाड़ा" शब्द का प्रचलन है। गुजराती लोक साहित्यकार श्री झवेरचंद मेघाणी ने इसे कथागीत कहा है। राजस्थान के विद्वान सूर्यकरण पारीक ने बैलेड के लिए गीतकथा नाम उपयुक्त समझा। यद्यपि गाथाओं का प्रचार वैदिक काल में भी था, पर इस समय तक इनका प्रसार अधिक बढ़ गया। सातवाहन ने लोक प्रचलित गाथाओं में से ही सात सौ गाथाओं का चयन करके 'गाथा सप्तशती' नामक पुस्तक का संकलन किया। यही इसका पुष्ट प्रमाण है। बुद्ध के जीवन से संबंधित कथाओं और गाथाओं का एकत्रीकरण 'जातक' नामक पालि ग्रन्थों में हुआ है। अपभ्रंश काल में लोक तत्वों एवं लोक जीवन के संबंध में वर्णन करने वाला ग्रंथ मिलता है- 'संदेशरासक'।

* लोक गाथाओं का वर्गीकरण →

1.) प्रेम-प्रधान लोक गाथाएँ →

2.) वीरता-प्रधान लोक गाथाएँ

3.) पौराणिक परक लोक गाथाएँ

4.) भक्ति परक लोक गाथाएँ

राजस्थान में लोक गाथाओं के नामों के साथ कुछ पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग भी मिलते हैं। पारिभाषिक शब्द इन गाथाओं के स्वरूप, रचना-विधान, वर्ण्य विषय, चित्रांकन आदि बातों का प्रतिनिधित्व

Scanned with CamScanner

करने वाले हैं। 'पड़' नाम से जाने जानेवाली गाथाओं में कथा के साथ-2 पट पर अंकित चित्रों का लाभ भी उठा सकते हैं। 'भारत' नाम से मिलने वाली गाथाओं में युद्धों की की प्रधानता होती है। 'पाबूजी' एवं 'देवनारायण' की पड़े प्रसिद्ध हैं तो 'माताजी रो भारत' और 'काला गोरा रो भारत' भी प्रसिद्ध है। ब्यांवलो नामक गाथाओं में कथानायक के जन्म से लेकर विवाह तक के कार्यों का वर्णन मिलता है। विवाह के कुछ समय पश्चात् या कभी-2 विवाह सम्पन्न होते ही नायक संन्यास ग्रहण कर लेता है। गरासिया जाति में इन ब्यांवलो का अधिक प्रचलन है। इन ब्यांवलो में- 'रामसापीर रो ब्यावलो', 'मीराँ बाई रो ब्यांवलो', 'दयालु बाई रो ब्यांवलो', 'अणची बाई रो ब्यांवलो' और 'शंकर रो ब्यांवलो' आदि बहुत प्रचलित हैं।

1.) प्रेम-प्रधान राजस्थानी लोक गाथाएँ →

मनुष्य के जीवन में प्रेम सर्वोपरि है। प्रिय के लिए अपना सर्वस्व लुटा देने की भावना ही प्रेम को चिर स्थायी रख सकती है। प्रेम की ज्योति अगर दोनों हृदयों में जलती रहती है तो उस प्रेम के लिए सोने में सुहागा की कहावत चरितार्थ होती है। एकपक्षीय प्रेम कई बार घातक भी सिद्ध होता है। प्रेम-प्रधान लोक गाथाओं में नायक-नायिका की देह यष्टि के सौन्दर्य-चित्रण की प्रवृत्ति पायी जाती है। विविध उपमानों का प्रयोग करते हुए नखशिखवर्णन किए जाते हैं। इन गाथाओं में प्रथम दृष्टि प्रेम को सर्वोत्कृष्ट बताया गया है। प्रेमी अपने संसार में मस्त रहना चाहते है पर सांसारिक व्यक्ति उन्हें चैन से नहीं जीने देते। उनके प्रेम मार्ग में अनेक प्रकार की बाधाएँ उपस्थित की जाती हैं। लोकलाज प्रेमियों की सबसे बड़ी बाधा है। वे अपनी इच्छा के अनुसार मिल-जुल नहीं सकते हैं। महेन्द्र मूमल से मिलने के लिए सदैव रात में चोरी छुपे जाता है। कहीं-2 पर सगे-संबंधी

(सौत)   (सौत)
मालवणी → ढोला → मारवणी (मारू)

को प्रेमियों के मिलन में अनेक प्रकार की बाधाएँ
डाल देते हैं। कभी यह कार्य सपत्नी (सौत) द्वारा सम्पन्न
किया जाता है। 'जलाल-बूबना' एवं 'बींझा-सोरठ' के
परस्पर मिलने में उनके सम्बन्धियों द्वारा कठिनाइयाँ उप-
स्थित की गई। मालवणी ढोला को मारू से नहीं मिलने देना
चाहती। इतनी कठिनाइयों को भी सहर्ष झेलते हुए प्रेमी
नियत समय पर मिले बिना नहीं रहते। प्रेम के आदर्श को
सर्वोपरि स्वीकार करने वाली इन नायिकाओं के आवास
स्थल पर कड़े पहरे लगा दिए जाते हैं पर प्रेमी किसी-
न-किसी भेष में मिल ही लेते हैं। प्रेम गाथाओं में
'बाळ पणे री प्रीत' को अत्यधिक महत्व दिया गया।
बाल्यकाल का यह प्रेम कभी गुड्डे-गुड्डी के खेल-खेल
में उत्पन्न हुआ है, कभी बछड़े चराते समय एक-दूसरे के
जीवन में बहुत नजदीक आ जाने पर उत्पन्न हुआ है।
रामू और चनड़ा बालपन में ही एक-दूसरे के साथी बन गए थे।
नागजी और नागवन्ती की प्रेम गाथा में भी एक स्थान पर
कहा गया है कि बालपन के प्रेम को तोड़ डालना असंभव
है। प्रेम कभी भी पुराना नहीं होता। यह तो नित-नूतन है।
राजस्थान में इन प्रेम गाथाओं में विरह भावना को भी महत्व-
पूर्ण स्थान मिला है। इनमें संदेश प्रेषण, मृदु उपालंभ, मान-
प्रसंग, विरहकाल में विरही हृदय पर पड़ने वाले प्राकृतिक
प्रभावों का भी लेखा-जोखा मिलता है। प्रेम की पुजारिन
मारवणी (मारू) को विरहकाल बहुत कठिन प्रतीत होता
है। ढोला-मारू, नागजी-नागवंती, रामू-चनड़ा आदि
दुखांत प्रेम गाथाएँ हैं। 'जसमादे-ओढ़नी' में जसमल का
प्राणांत हो जाता है। नागजी नागवन्ती के प्रेमसूत्र को तोड़ देता है।
रामू-चनड़ा में दोनों प्रेमी अपनी देहलीला समाप्त कर देते हैं।

2) वीरत्व प्रधान राज. लोक गाथाएँ →

विश्व में 'हिम्मत री कीमत' है। हिम्मतवान की अक्षयकीर्ति-पताका युग-युगांतर

तक फहराती रहती है। उसका शरीर मिट जाता है पर उसके यश को मिटाने वाला कोई नहीं है। वह मरकर भी अमर हो जाता है। लोगों के समक्ष आदर्श उपस्थित कर जाता है। भावी पीढ़ीयाँ उसका देवतुल्य सम्मान करती हैं। 'निहालदे-सुल्तान' नामक लोकगाथा में अमर रहने वाले कीर्ति के उपासक के लिए कौन-२सी विशेषताएँ होनी चाहिए, इसका वर्णन किया गया है –

"सदा रहै कौल रो दृढ़, जुद सूं पीठ न मोड़े।
रण में रहै निसंक, सीस सत्रुवारा तोड़े।
बोले नहीं बड़बोल, काठ नहीं (शत्रु) मन का।
विपत देख न संचरे, गरब होय न धन का।
सिरणागत री रिच्छा करै, दया धर्म और चातुरी
दस लक्षण रजपूत रां, नाम धरावै क्षातरी (क्षत्रिय) ॥"

उक्त दस गुणों से सम्पन्न होने वाला व्यक्ति वीर कहलाने का अधिकारी है। राजस्थानी लोक गाथाओं के नायक इन सभी गुणों से विभूषित है। क्या सुल्तान, क्या पाबू राठौड़, क्या सभी बगड़ावत, क्या तेजा, क्या गोगा, क्या पृथ्वीराज कोई भी किसी से कम नहीं है। यहां की वीरांगनाएँ भी अपना सर्वस्व न्योछावर करने में पीछे नहीं रही हैं। वीरता प्रधान ये गाथाएं तत्कालीन समाज की अवस्थाओं, सामाजिकों की मान्यताओं और धारणाओं का भी उल्लेख करती हैं। उस जमाने में दूल्हे की योग्यता तोरण वंदना से भी आंकी जाती थी। वधू पक्ष वाले जानूबूझकर तोरण को काफी ऊँचे स्थान पर रखते थे। 'पाबू जी री पड़' में हमें वर्णन मिलता है कि सोढ़ों ने तोरण की ऊँचाई बहुत ऊँची रखी थी। कई बार तोरण वंदना ही वाद-विवाद का विषय बन जाता है। राजस्थान के ये वीर किसी गरीब की हाय नहीं लेना चाहते। वे तो उनके दुःखड़े में शामिल होना चाहते हैं। इन वीरों में कर्त्तव्यपरायणता सबसे बड़ी बात है। ये वीर सत्य और धर्म के रक्षक थे। धर्म की महत्ता को इन गाथाओं

Scanned with CamScanner

में बार-2 स्वीकारा गया है। ये वीर छल, कपट एवं स्वार्थी प्रवृत्ति से दूर ही रहते थे। वचन का निर्वाह करना इनका उद्देश्य रहता था। देवल देवी को वचन देने वाले पाबू राठौड़ विवाह मंडप से उठ आए थे। सवाई भोज ने जैमन्ती को रैण के राव के वहाँ से ले आने का वचन दिया था, जो उसने पूरी तरह निभाया। वीर तेजा का सारा शरीर लहूलुहान हो गया था पर अपने वचन से बँधा वह वासुकि सर्प के पास जाकर ही रहा। इन सभी वीर गाथाओं में 'प्राण जाई पर वचन न जाई' बात का समर्थन किया गया। राजस्थानी लोकगाथाएँ वीरों की दानवीरता के उदाहरणों से भी भरी पड़ी हैं। दानवीर दी हुई पृथ्वी पर भी ये पैर नहीं रखना चाहते। ये धन के संचय की अपेक्षा उसे गरीबों में बाँट देना उचित समझते हैं। वीरता प्रधान इन गाथाओं में नायक के प्रति किसी पात्र द्वारा कहे गए व्यंग्य वाक्य गाथा को नया मोड़ देते हैं। शूरवीर किसी की भी कड़वी बात को भी सहन नहीं कर सकता। 'बगड़ावत' में कहा भी गया है- 'शूरां ने नीं खूटे अंबखा बोल।' वीर तेजा भी अपनी भाभी के कड़वे बोल सुनकर पत्नी को लेने ससुराल चले गए। राजस्थान की इन वीर गाथाओं में वीरों द्वारा खेली जाने वाली मृगया एवं किए जाने वाले युद्ध के भी अनेक चित्र मिलते हैं। इस प्रकार के वर्णनों में वीर की वेशभूषा, उसके अस्त्र-शस्त्र, उसके वाहन घोड़े अथवा हाथी, सेना के चलने का ढंग, एक-दूसरे पर किए जाने वाले प्रहारों, युद्ध करने की पद्धतियों आदि का उल्लेख मिलता है। इन्हीं गाथाओं में दैविक पात्रों का भी वर्णन मिलता है। ये दैविक पात्र कहीं-2 मानव मात्र की सहायता करते दिखाई देते हैं तो कहीं उनकी परीक्षाएँ लेते दिखाई देते हैं। बगड़ावतों के नाश हेतु देवी चामुण्डा को रानी जैमन्ती, पातु कलाली और बूबली घोड़ी का रूप धारण करना पड़ा। वीर गाथाओं में जीवन की क्षणभंगुरता को बताकर कहा गया है कि मानव जीवन का उद्देश्य यश का अर्जन करना ही होना चाहिए ताकि व्यक्ति के मरने के बाद भी उसकी कथा शताब्दियों तक चलती रहे।

Scanned with CamScanner

3.) पौराणिक लोकगाथाएँ →

राजस्थान की कुछ गाथाओं का कथानक पौराणिक प्रसंगों पर आधारित है। इन पौराणिक चरित्रों व प्रसंगों को इन गाथाओं के माध्यम से उभारकर लोक के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किए गए हैं। इन गाथाओं में हमें भारतीय संस्कृति के साथ-ही-साथ राजस्थान की लोक संस्कृति का भी स्वरूप देखने को मिलता है। प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था उस समय के निवासियों की वैचारिक मान्यताएँ आदि अध्ययन की दृष्टि से इन गाथाओं का बड़ा महत्व है। इन गाथाओं के चरित नायक अदम्य साहसी, अनेक कार्यों को सम्पन्न करने वाले, धर्म संस्थापक, धीर, वीर, गंभीर एवं सबके मन को हरने वाले हैं। इन पात्रों को अनेक प्रकार के प्राकृतिक और अतिप्राकृतिक तत्वों का सामना करना पड़ता है। इनमें कुछ दैविक पात्र भी होते हैं, जो नायक के सहयोगी भी हो सकते हैं और नायक के रास्ते में बाधा डालने वाले भी हो सकते हैं। इन गाथाओं में काळा गोरां रो भारत, लोक भारत स्यावकरण घोड़ो, रामदला री पड़, कृष्ण दला री पड़ आदि अत्यधिक प्रचलित गाथाएँ हैं। पौराणिक घटनाओं को राजस्थानी लोक गाथाओं में तोड़-मरोड़ गया है। इन गाथाओं के पात्र ईश्वरीय शक्ति से सम्पन्न होते हैं। पौराणिक गाथाओं में उपदेश की प्रवृत्ति दिखाई देती है। परोपकार ही सुखों का मूल कारण है, यश मनुष्य को अमर बना देता है, धन-यौवन चार दिन के पाहुने हैं, घमण्डी का सिर नीचा होता है आदि अनेक उपदेश कथाएँ इन गाथाओं में मिल जाती हैं। इन गाथाओं में धर्म और अधर्म, पाप-पुण्य, सुख-दुःख, कर्म-फल आदि का भी विवेचन मिलता है। 'राम-दुलारी पड़' में सांसारिकता के झूठे मोह को निस्सार बताया गया है। धर्म पथ पर चलने वालों के लिए कहा गया है-
'धरमी बंदा धरम करे, पकड़-पकड़ गऊ री पूंछ गंगा तरे' इसमें कलयुग का चित्रण भी किया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पौराणिक गाथाओं में प्राचीन भारतीय संस्कृति के

साथ ही वर्तमान परिस्थितियों का भी उल्लेख किया गया है।

4.) भक्ति परक लोक गाथाएँ →

धर्म में अत्यधिक श्रद्धा एवं भक्ति भावना ये दोनों तत्व प्रत्येक भारतीय की आत्मा के साथ जुड़े हुए हैं। इस देश के प्रत्येक प्रदेश में बालक को प्रारंभ से ही धार्मिक शिक्षा दी जाती है। भक्त अनेक कष्टों, विघ्न बाधाओं को झेलता हुआ अंततः परमात्मा को प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है। भक्ति के कारण उसमें दैविक गुणों का विकास होने लग जाता है। राजस्थान में लोक प्रचलित 'ब्यांवलो' नाम से कही जाने वाली लोक गाथाओं में प्रमुख बात यही है कि पात्र विवाह तक सांसारिक जीवनयापन करता है और विवाह होते ही उसके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। सांसारिकता से उसका मन दिनों-दिन हटता जाता है और अंत में उसकी परिणति वैराग्य धारण करने में होती है। इन ब्यांवलो के अतिरिक्त रूपादे, भर्तृहरि, गोपीचंद आदि अनेक भक्ति परक लोक गाथाएँ मिल जाती हैं। 'रूपादे' नामक लोकगाथा में उसका पति उसके चरित्र पर अनेक आरोप लगाता है पर उसकी अद्वितीय शक्ति के दर्शन पर आश्चर्यचकित हो जाता है और उसके पैर पकड़ लेता है। भक्ति भावना किसी को तो जन्म से ही प्राप्त होती है और कभी किसी गुरु के उपदेश से प्रभावित होने पर हृदय में उमड़ पड़ती है। जब-2 भी भक्त पर किसी प्रकार का दुख आ पड़ता है, तब-2 स्वयं ईश्वर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसकी सहायता करते हैं। इन गाथाओं में भक्ति एवं तपस्या के प्रभाव को व्यक्त किया गया है। यहाँ कई बार गुरु शिष्य की परीक्षा लेते हैं और कई बार शिष्य गुरु के संबंध में जानने का प्रयत्न करते हैं। भर्तृहरि गुरु गोरखनाथ से कहते हैं – "गुरुजी म्हाराज मिरग ने जीवत कर दो, चेलो बिण जासूं।
दुखिया रा आधार सद्‌गुरु चेलो बिण जासूं।।"

(9)

Date: / / Page

इन गाथाओं में कर्मवाद को भी महत्व दिया गया है। जो व्यक्ति जैसे कर्म करेगा, उसे वैसे ही फल भोगने पड़ेगें। इसके अलावा जिसके भाग्य में विधाता ने जो कुछ लिख दिया, उसे कोई मिटा नहीं सकता। किसी के भाग्य को न कोई छीन सकता है और न कोई उसमें अपना कुछ हिस्सा रख सकता है। निम्न आधार पर भाग्यवाद की पुष्टि की गई है —

1.) भाग नै जोग करम रो कुण सीरी – रूपादे लोक गाथा से

2.) राणां जी करम में लिखिया जोग, अंग तो लिखिया भगवा कपड़ा – भर्तृहरि की लोक गाथा

*

Scanned with CamScanner